१

परीक्षा

[मार्च १९४०]

पात्र-परिचय

१ डॉ० राजेश्वर रुद्र, डी० एस-सी०	
विश्वविख्यात वैज्ञानिक	आयु ५४ वर्ष
२ प्रोफ़ेसर केदारनाथ, एम्० ए०	
अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर	आयु ५० वर्ष
३ मिसेज़ रत्नानाथ, बी० ए०	
प्रो० केदारनाथ की पत्नी	आयु २० वर्ष
४ मि० किशोरचन्द्र	
डॉ० रुद्र का क्लर्क	आयु ३० वर्ष
५ रोशन	
डॉ० रुद्र का नौकर	आयु ४० वर्ष

रंगमंच का मान-चित्र

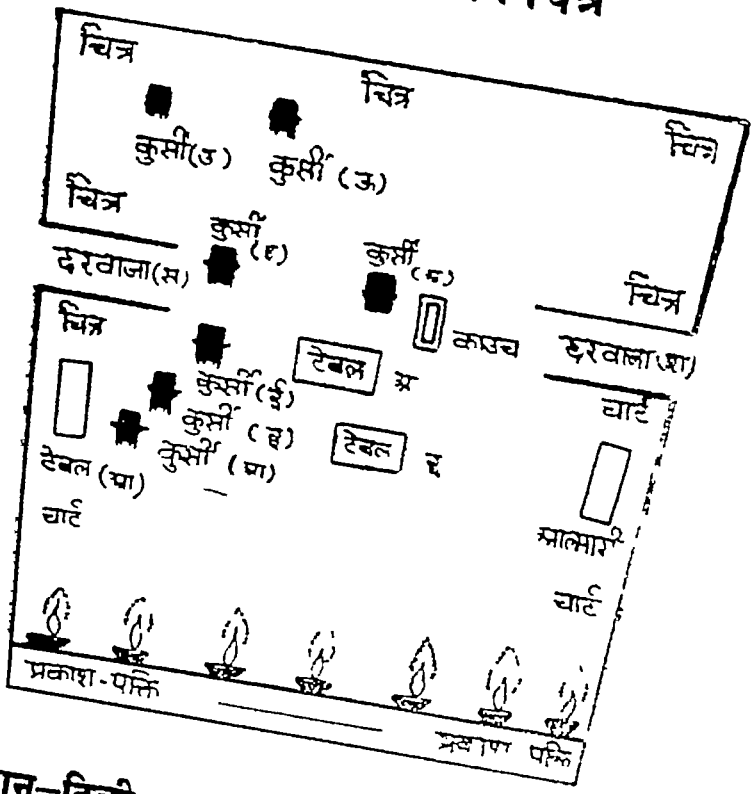

स्थान—दिल्ली

काल—सन् १९४० (मई २०)

इस नाटक का सर्व प्रथम अभिनय प्रयाग विश्वविद्यालय के म्योर हॉस्टल के विद्यार्थियों द्वारा १९४० में श्री० आर० एन० देव के निर्देशन में हुआ। भूमिका इस प्रकार थी :—

डॉ० राजेश्वर रुद्र—श्री० जी० सी० चतुर्वेदी

प्रो० केदार नाथ—श्री एम० एस० दत्त

मिसेज़ रत्ना—श्री दया सागर

किशोर—श्री एच० सी० वर्मा

रोशन—श्री एच० के० सिंह

सात बजे शाम। डॉ० राजेश्वर रुद्र, डी० एस्-सी० का आफ़िस। कमरे में संसार के वैज्ञानिकों के चित्र और चार्ट लगे हुए हैं। बीच में एक टेबुल (अ) है जिस पर फूलदान, फ़ोन, काग़ज़, क़लम आदि रक्खे हैं। आसपास दो-तीन कुर्सियाँ और एक काउच रखा हुआ है। दाहिने ओर एक टेबुल (आ) और कुर्सी है। टेबुल पर टाइपराइटर और काग़ज़ आदि हैं। डॉ० रुद्र का क्लर्क किशोर टाइपराइटर पर काम कर रहा है। एक नौकर झाड़न से टेबुल, कुर्सी और चित्र सावधानी के साथ साफ कर रहा है। कमरे में सन्नाटा है। केवल टाइपराइटर की आवाज़ हो रही है। एक मिनट बाद कमरे मे घंटी बजती है, बाहर से शायद किसी ने स्विच दबाया है। किशोर रुक कर नौकर की ओर रुख़ करता है।

किशोर—रोशन, देखो बाहर कौन है।

[रोशन दरवाज़ा (स) से बाहर जाता है। किशोर काग़ज़ देखने लगता है। एक मिनट में रोशन एक कार्ड लेकर आता है और अदब से किशोर को देता है।]

किशोर—[देख कर] प्रोफेसर केदारनाथ। [सोचता है। रोशन से] उन्हें अन्दर ले आओ।

[रोशन बाहर जाता है। किशोर कुर्सी से उठ कर प्रो० केदारनाथ का स्वागत करने के लिये आगे बढ़ता है। दरवाज़ा (स) से प्रो० केदारनाथ का प्रवेश। प्रो० केदार ५० के लगभग हैं। बाल कुछ कुछ सफ़ेद हो गये हैं। अंग्रेज़ी वेषभूषा। हाथ में छड़ी।]

कि०—आइए, प्रोफ़ेसर केदारनाथ !

केदार—[हाथ मिलाते हुए] थैंक्स। डा० राजेश्वर रुद्र नहीं हैं क्या ?

कि०—जी नहीं। वे अभी अपनी लेबोरेटरी से नहीं आये। [सोचते हुए] आप ही ने तो शायद ख़त भेजा था ? जवाब तो गया होगा ? बैठिए।

के०—हाँ, [कुर्सी (ई) पर बैठते हुए] 'जवाब तो मिल गया था, लेकिन मैं अपना प्रोग्राम नहीं लिख सका। मैंने अपना प्रोग्राम बदल दिया है। अब यहाँ सिर्फ़ एक दिन ही ठहर सकूँगा। काश्मीर परसों ही पहुँच जाना चाहता हूँ।

कि०—ऐसी जल्दी क्या है ?

के०—जल्दी ही है। मैं डा० रुद्र से माफी माँगना चाहता था कि हम लोग आपके यहाँ नहीं ठहर सकेंगे। मेरी वाइफ भी मेरे साथ है। हम लोगों ने सोचा डा० रुद्र बहुत बिज़ी आदमी हैं, हम लोग उनके काम में·····

कि०—नहीं, आपके ख़त का जवाब लिखाते वक्त तो वे आपकी बड़ी तारीफ़ कर रहे थे। कहते थे—आप उनके पुराने दोस्त हैं। वे तो आपके ठहरने से ख़ुश ही होते !

के०—यह उनकी मुहब्बत है। सोचिए, इतना नाम कमा कर वे वैसे ही होमली बने हुए हैं। दुनियाँ में उनका कितना नाम है! सायस के अख़बार तो उनकी तारीफो से भरे रहते हैं। हम लोगों को अभिमान है कि वे हमारे ही देश के हैं।

कि०—जी हाँ।

के०—कब तक आवेंगे?

कि०—और दिन तो इस वक्त तक आ जाते थे, लेकिन आज न जाने क्यो देर हो गयी? शायद काम पूरा न हुआ हो। आजकल वे एक बड़ी गहरी खोज में लगे हुए हैं।

के०—अच्छा?

कि०—कहिये तो उन्हें फोन करूँ? [फ़ोन हाथ में लेता है।]

के०—नहीं, रहने दीजिए। उनके काम मे ख़लल होगा। जब फ़ुरसत पायेंगे, चले आयेंगे। तब तक मैं ज़रा पोस्ट आफ़िस तक होता आऊँ। पोस्ट मास्टर से कुछ बात करना है। काश्मीर का एड्रेस भी देना है।

कि०—पोस्ट आफिस तो बन्द हो गया होगा।

के०—लेकिन मुझे पोस्ट आफिस क्वारटर्स जाना है।

कि०—जाने की क्या जरूरत है? फोन यूज़ कर सकते हैं।

के०—नहीं। उनसे मिलना भी है। यों ही टहलता हुआ जाऊँगा। हाँ, अभी कुछ देर बाद आ सकता हूँ। आप डॉ० रुद्र को मेरा कार्ड दे दें।

कि०—[नम्रता से] बहुत अच्छा।

[केदार का प्रस्थान दरवाज़ा (स) से। किशोर अपने टेबुल पर आकर फिर टाइप करने लगता है। दो मिनट बाद रोशन आकर किशोर से कहता है—]

बाबू, हुज़ूर आ रहे हैं।

[किशोर उठकर अदब से खड़ा हो जाता है। डॉ० रुद्र का प्रवेश दरवाज़ा (स)। आयु ५४ के लगभग। लेकिन काम अधिक करने से वृद्ध मालूम पडते हैं। आधे से अधिक बाल सफ़ेद हो गये है। गम्भीर व्यक्तित्व। अँग्रेज़ी वेषभूषा जो लापरवाही से पहनी गई है। सोने की कमानी का चश्मा। हाथ में छड़ी। झुक सलाम करता है। डा० रुद्र सलाम का जवाब सिर हिला कर देते है। छड़ी एक कोने में रखते हैं और भारीपन से कुर्सी (अ) पर बैठ जाते हैं।]

रुद्र—एक गिलास पानी।

[किशोर अदब के साथ एक गिलास में आलमारी से बोतल निकाल कर पानी देता है। डा० रुद्र कुछ सोचते हुए धीरे-धीरे पानी पीते हैं। किशोर अपने पाकेट से विज़िटिंग कार्ड निकाल कर टेबुल पर रखता है। डॉ० रुद्र सोचते-सोचते विज़िटिंग कार्ड पर नज़र डालते हैं, ग़ौर से देखते हैं, फिर एकबारगी चौंक कर—]

प्रो० केदारनाथ !

कि०—जी हाँ, वे आये थे।

रु०—क्या वे यहाँ नहीं ठहरेंगे ? यह कार्ड कैसा ?

कि०—जी नहीं। वे माफी माँगने आये थे। वे एक दूसरी जगह ठहर गये हैं।

रु०—[ज़रा ज़ोर से] तुमने उन्हें रोका क्यों नहीं, मेरे आने तक ?

कि०—मैंने उनसे रुकने के लिये कहा था, लेकिन ज़रूरी काम से वे पोस्ट आफ़िस के कारटर्स तक गये हैं। अभी लौट कर आने को कहा है।

रु०—[गम्भीरता से] हूँ। तुम्हें रोकना चाहिये था उन्हें मेरे आने तक। [कुछ देर रुक कर] आज की डाक ?

कि०—जी हाँ, तेरह मैगज़ीन हैं। आपके रिटायरिंग रूम के टेबुल पर सजा दिये हैं। पढने की जगह निशान भी लगा दिये हैं। बाक़ी लेटर्स हैं।

रु०—[कुर्सी पर आराम से टिकते हुए] कहाँ के हैं ? सुनाओ।

कि०—[पत्रों को उलट-पुलट कर एक पत्र निकालते हुए] यह फ्रैंकलिन इन्स्टीट्यूट वाशिंगटन के सेक्रेटरी का है। [पढ़ते हुए] डियर प्रोफ़ेसर रुद्र, युअर रिसर्चेज आर अव् वर्ल्ड वैल्यू। दि इन्स्टीट्यूट हैज़ रिकोमैन्डेड युअर नेम फार इट्स फ़ैलोशिप। यू शैल हियर फ्राम अस विदिन ए मन्थ। काग्रेचुलेशन्स। एच्. एम्. जोन्स, सेक्रेटरी।

रु०—[किंचित स्मिति के साथ] एफ० एफ० आइ०। फैलो अव् दि फ्रैंकलिन इन्स्टीट्यूट। अच्छा लिखो। (बोलते हैं, किशोर लिखता है।] डियर मिस्टर जोन्स, आइ थैंक दि इन्स्टीट्यूट फ़ार दी आनर कन-फ़र्ड आन मी। माइ सरविसेस आर फार दि इन्स्टीट्यूट। युअर्स सिनसीयरली। दूसरा ?

कि०—[दूसरा पत्र निकालते हुए] कारनेगी इन्स्टीट्यूट बोस्टन का है। [पढ़ते हुए] डियर डॉ० रुद्र, युअर रिसर्चेज़ आन् दि कनवर्शन अव् ए क्राइ इन् टू ए लाफ़्टर शैल मिटिगेट दि मिज़रीज़ अव् दि वर्ल्ड। प्लीज़ एक्सेप्ट अवर काग्रेचुलेशन्स। जी. हैमिल्टन, रजिस्ट्रार।

रु०—डियर मिस्टर हैमिल्टन, थैंक्स फार दि लेटर। दिस इज़ बट् एन् अभ्बुल कान्ट्रीब्यूशन टू दि हैप्पीनैस अव् दि वर्ल्ड। थैंक्स। युअर्स सीनसीयरली।

कि०—[तीसरा पत्र निकालते हुए] यह पत्र इलाहाबाद के विज्ञान के सम्पादक का है। लिखते हैं, सेवा में डॉ. राजेश्वर रुद्र, महोदय, आपने मस्तिष्क सम्बन्धी जो खोज की है और तत्सम्बन्धी जो परिभाषिक शब्द दिये हैं उनसे विज्ञान-साहित्य के एक बड़े अभाव की पूर्ति हुई है। इस विषय में आगे का लेख भेजने की कृपा करें। भवदीय, सत्यप्रकाश, सम्पादक।

रु०—प्रिय डॉ० सत्यप्रकाश, आपके पत्र के लिये धन्यवाद। आगामी लेख दो महीने बाद भेज सकूँगा। आजकल काम मे बहुत व्यस्त हूँ। क्षमा करें। भवदीय।

कि०—[चौथा पत्र निकालते हुए] यह पत्र साइंस इन्स्टीट्यूट, बगलोर का है। [इतने में रोशन दरवाज़ा (स) से आकर सलाम करता है और हटकर खडा हो जाता है। डॉ रुद्र रोशन की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हैं।]

रो०—हुजूर, वो साहब यहाँ आये हुए हैं जो अभी आये थे। [कार्ड देता]

रु०—[कार्ड लेकर बिना देखे हुए ही प्रसन्नता से] प्रोफेसर केदार ! [कार्ड देखते हैं। किशोर से] मि. किशोर, बाक़ी चिट्ठियाँ नौ बजे के बाद ? अभी इतनी चिट्ठियाँ ही ··(डॉ० रुद्र उठ खड़े होते हैं। रोशन से] भेजो उन्हें। [रोशन जाता है] ओ नहीं, मै ख़ुद [प्रसन्नता से आगे बढ़ते हैं। प्रो० केदार का प्रवेश। डा० रुद्र बड़ी उमंग से गले मिलते हैं।]

रु०—[गद्गद् होकर] प्रोफेसर ···प्रोफेसर ·····के ·· दा ··र ··

के०—[प्रसन्नता से] डॉक्टर रुद्र, ओ रुद्र।

रु०—[अलग होकर] कब आये ?

के०—अभी दोपहर को।

रु०—तुम आये थे अभी ?

के०—हाँ, लेकिन तुम थे नहीं। मैंने सोचा तब तक पोस्ट मास्टर मिस्टर विश्वास से मिल लूँ। काश्मीर का एड्रेस वग़ैरह दे दूँ। वे भी घर पर नहीं मिले, जैसा गया वैसा लौट आया।

रु०—बैठो, मुझे ख़बर नहीं दी ? मेरे पास ही ठहरने वाले थे तुम तो ?

के०—[कुर्सी (इ) पर बैठते हुए] हाँ, इरादा तो यही था, लेकिन...

रु०—[उत्सुकता से] लेकिन क्या ? [कुर्सी (अ) पर बैठते हैं]

के०—मुझे अपना प्रोग्राम बदल देना पड़ा।

रु०—कैसे ?

के०—मुझे आज ही जाना है। मैं परसों काश्मीर पहुँच जाना चाहता हूँ।

रु०—लेकिन फिर भी मेरे पास ठहर सकते थे ?

के०—लेकिन ठहर नहीं सका। माफ करना डॉक्टर !

रु०—आख़िर है क्या बात ? ठहरे कहाँ हो ?

के०—मिस्टर जे० के० वर्मा के यहाँ। जानते होगे ट्रैफिक सुपरिन्टेन्डेंट हैं।

रु०—हाँ, हाँ, जानता हूँ। वे तो यहीं रहते हैं, कनाट सरकस में !

के०—उनकी वाइफ मिसेज़ शीला मेरी वाइफ की सहेली हैं। वहीं ठहरना पड़ा। फिर सिर्फ एक दिन की बात·····

रु०—अरे ठहरो। सब बातें एक साथ मत कहो। पहले यह बतलाओ, तुम्हारी वाइफ···तुम्हारी वाइफ तो···तुम तो अकेले थे···? ऐं, ज़रा ठहरो [किशोर से] मि. किशोर, तुम ज़रा बाहर के कमरे में बैठो। अभी बुलवाऊँगा। [किशोर संजीदगी के साथ दरवाज़ा (स) से जाता है, रुद्र केदार की ओर मुड़कर] हाँ, तो यह कैसे····· तुम्हारी वाइफ·····!

के०—[झेंपते हुए से] फिर ···फिर मैंने दूसरी शादी कर ली।

रु०—[प्रसन्नता मे उछल कर खड़े होते हुए] ओ गुड, प्रो० केदार काग्रेचुलेशन्स। तुम में ज़िन्दगी है। तबीयत है। अच्छा ! तुमने ख़बर

नहीं दी ! [रोशन को पुकार कर] ओ रोशन, [रोशन का दरवाज़ा (स) से प्रवेश] ज़रा चाय और मिठाइयाँ लाओ।

के०—नहीं, डॉक्टर रहने दो। मैं अभी नाश्ता करके आ रहा हूँ।

रु०—अच्छा ! मिसेज़ केदार कहाँ हैं ? [नौकर से] जाओ सिगरेट और पान-इलायची लाओ।

[रोशन दरवाजा (स) से जाता है।]

के०—वे वहीं हैं, मिसेज शीला के साथ। मैं जब चला था तो खूब बातें हो रही थीं। बहुत दिनों के बाद मिली हैं न ?

रु०—उन्हें साथ नहीं लेते आये ? बुलवाऊँ ? ओः मैं खुद जाऊँ ! [प्रस्तुत होते हैं] लेकिन······[ठहर जाते हैं।]

के०—नहीं, इतनी तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत ! जाने के पहले वे आपके दर्शन ज़रूर करेंगी। आपसे मिलने के लिए उन्होंने खुद मुझ से कहा था। बैठिए।

रु०—[बैठते हुए] ऐसी बात है ? तो मैं ज़रूर मिलना चाहूँगा। प्रो० केदार, काग्रेचुलेशन्स।

के०—थैंक्स, डॉक्टर !

रु०—तो तुमने शादी कर ही ली ! गुड, प्रोफेसर !

के०—मैं तो शादी करना ही नहीं चाहता था ! पचास के क़रीब हुआ, लेकिन फिर कर ही ली। सोचा··ज़िन्दगी ठीक हो जायगी !

रु०—ज़िन्दगी ठीक हो जायगी ! अच्छा किया। तब तो अच्छी ही होंगी !

के०—अच्छी ! बहुत अच्छी !!

रु०—गुड, अच्छा इस शादी की शुरूआत कैसे हुई ?

के०—शुरूआत ? कुछ नहीं। वे मेरी स्टूडेण्ट थीं। बहुत होशियार। मैं उनसे ख़ुश रहा करता था, वे भी मुझ से ख़ुश रहा करती थीं। धीरे-धीरे मालूम हुआ कि हम लोग एक-दूसरे को ····

रु०—अच्छा, तब तो बहुत पढी लिखी होंगी ?

के०—ग्रेजुएट हैं।

रु०—ग्रेजुएट ? ओ गुड ! तब तो उमर कुछ बड़ी होनी चाहिए।

के०—हाँ, यही बीस के क़रीब है।

रु०—तब तो काम में सचमुच बड़ी मदद मिलेगी। भला बुरा समझने की उमर और फिर लियाक़त में ग्रेजुएट !

के०—वाक़ई डॉक्टर, और फिर रत्ना बी० ए० पास है, लेकिन रहन-सहन बहुत सीधा-सादा है। बरताव तो बिलकुल मेरी तबियत के मुताबिक़ है।

रु०—काग्रेचुलेशन्स। खुशी है ! इस उमर में तुमको ऐसे ही साथी की ज़रूरत थी ! [रोशन दरवाज़ा (स) से सिगरेट, पान-इलायची लाता है।] आओ, सिगरेट पियो, पान खाओ। रोशन, बाहर। [रोशन बाहर दरवाज़ा (स) से जाता है] ओ गुड ! [केदार की सिगरेट जलाता है।]

के०—[सिगरेट का धुँआ छोड़ते हुए] मैं तो पहले सोचता था कि वे मुझ से शादी करेंगी भी या नहीं ?

रु०—शायद यह बात तुम उमर के लिहाज़ से सोच रहे होगे ?

के०—हाँ, कुछ-कुछ यही बात है। मेरी उमर ५० के क़रीब होगी, वे सिर्फ़ २० की हैं।

रु०—५० और २० [सोचते हैं।]

के०—और फिर एक ग्रेजुएट लड़की ! जानते हो डॉक्टर, ये ग्रेजुएट्स क्या चाहती हैं ? स्वतन्त्रता—आर्थिक स्वतन्त्रता—इकनामिक फ्रीडम—पति सिर्फ उनका साथी है—और पति का कर्तव्य क्या है ? काम्पिटीशन में बैठे, आइ. सी. एस्. में आवे !

रु०—[मुस्कुराकर] घर में चार नौकर और मोटर। यङ्ग कंपेनियन !

के०—बिलकुल ठीक। इसी बात से तो पहले मैं झिझक रहा था।

रु०—झिझकने की क्या बात प्रोफेसर ? लड़की का टेम्परामेंट ही ऐसा होगा कि पढने-लिखने में ज़्यादा दिलचस्पी होगी। नहीं तो वे तुम्हें पसन्द ही क्यों करतीं ? आख़िरकार लड़की के अपने स्वप्न भी होते हैं। क्या वे सुन्दरता नहीं चाहतीं ? क्या वे नयी उमर नहीं चाहतीं ? यह तो आप भी जानते होंगे कि लड़की सफेद बालों के बजाय काले बाल ही पसन्द करती है।

के०—दिस इज़ एज़ श्योर एज़ देअर यूथ !

रु०—फिर जब उन्होंने तुमसे विवाह कर लिया तो क्या इससे यह साफ़ नहीं मालूम होता कि वे मामूली लड़की नहीं हैं ? वे उमर के मुक़ाबले में तुम्हारे स्वभाव या तुम्हारी लियाक़त की ज़्यादा क़ीमत करती हैं। वे गम्भीर स्वभाव की होंगी। प्रावेबली कोल्ड।

के०—नहीं, कोल्ड तो नहीं हैं। वे तो—

रु०—कोल्ड से मेरा मतलब यही है कि वे ज़्यादा सोशल न होंगी।

के.—हाँ, वे ज़्यादा सोशल तो नहीं हैं। बड़ी सरल हैं।

रु.—और वे प्रेम के बजाय तुम्हारा आदर ज़्यादा कर सकती हैं!

के.—क्या तुम इन सब बातों से कुछ खोज करना चाहते हो? तुम तो बड़े भारी साइकॉलोजिस्ट हो। मन की बहुत सी नयी बातें खोज निकालते हो। एक यह भी सही·····

रु०—हाँ, है तो बहुत इंटरेस्टिंग केस केदार, लेकिन···

के०—लेकिन क्या···? मैं बहुत दिनों तक इसी समस्या में उलझा रहा। वे ग्रेजुएट हैं, बी. ए. पास हैं। लेकिन वे मेरी तबीयत के ख़िलाफ नहीं जातीं। मेरे लिए सब कुछ अपने हाथ से करती हैं। लेकिन यह सब वे क्यों करती हैं? क्या इसलिए कि वे मेरी वाइफ हो गयी हैं? या इसलिए कि वे अपने दिल से यह महसूस करती हैं?

रु०—उनके दृष्टिकोण में एक उदारता होगी। अच्छा, यह बतलाओ कि जब वे तुम्हारी स्टूडेंट थीं तो ज़्यादा तो नहीं बोलती थीं?

के०—शायद बिना बोले हफ्ते गुज़र जाते थे। काम तो ठीक कर के लाती थीं, लेकिन बातचीत में हमेशा नपे-तुले शब्द। मैंने कभी उन्हें ज्यादा बोलते हुए देखा ही नहीं।

रु०—शायद उनकी ट्रेनिंग ही ऐसी हो। घर का वातावरण ही ऐसा होगा। उनके माता-पिता कभी आपस में न लड़े होंगे। पिता शायद सीधे और पुराने ख़्याल के हों।

के०--हाँ, यही बात है। उनके पिता एक गाँव के मालगुज़ार हैं।

रु०—यही बात हो सकती है। लेकिन उनके बी. ए. तक पढ़ने का कोई ख़ास कारण होना चाहिए ?

के०—उनके भाई का जोर था कि वे बी. ए. तक ज़रूर पढ़ें। उनके भाई एक जज हैं।

रु०—ठीक है। तो ज्ञान और शील दोनों बातें उनमें हैं। लेकिन.....

के०--लेकिन क्या ?

रु०—[सोचते हुए] कुछ नहीं।

के०—नहीं ज़रूर कुछ है !

रु०—तुमने कभी उन्हें अकेले सोचते हुए देखा है ?

के०—वे कभी अकेली रहती ही नहीं।

रु०—क्या अकेले रहना नहीं चाहतीं ?

के०—जो भी हो, लेकिन वे हमेशा मेरे साथ ही रहती हैं। मेरे साथ ही हँसती-खेलती हैं। शादी होने के बाद वे कहीं गयी ही नहीं। दो तीन दिन के लिए सिर्फ अपने पिता के यहाँ गयी थीं।

रु०--कभी तुमने उन्हें उदास देखा है ?

के०--एक बार जब प्रो० उदयनारायण के यहाँ पुत्रोत्सव से लौटी थीं तो कुछ दिन तक कहती रहीं कि मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। लेकिन यह सब कहने के बाद वे शायद सम्हल कर हँसने की कोशिश करती थीं।

रु०--बहुत सुन्दर क्षेत्र है, केदार !

के०—मै चाहता हूँ डॉक्टर कि तुम परीक्षा करके देख लो, चाहे जिस तरह। मुझे इतमीनान हो जायगा कि वे जो कुछ हैं, कहाँ तक हैं, कितनी गहरी हैं।

रु०—मैं तो समझता हूँ कि वे जितनी हैं, सच्ची हैं। यही हो सकता है कि आपके लिए प्रेम होने के बजाय उनके दिल मे आदर ज़्यादा हो। वे आपके लिए सब कुछ कर सकती हैं, सब कुछ दे सकती हैं।

के०—मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ, लेकिन कभी-कभी उनके बरताव की सरलता देख कर मुझे शक होने लगता है कि यह सब किसलिए? मेरे लिए यह सब करने की क्या ज़रूरत है? मालूम होता है कि वे मुझ पर दया करती हैं। और यह दया क्यों? क्या वे मुझे अपने काम मे भुलाना चाहती हैं?

रु०—शायद!

के०—शायद क्यों? एक्सपेरिमेंट क्यों नहीं कर देखते? तुम तो बड़े भारी मनोवैज्ञानिक हो। फिर मेरे दोस्त। मेरे साथ पढ़े हुए। मैं किसी के सामने अपनी ज़िन्दगी का राज़ ही क्यों खोलता? तुम मेरे दोस्त हो, इसलिए तुम से कोई चीज़ क्यों छिपाऊँगा? जब मैं तुमको अपने दिल की बात बतला रहा हूँ फिर तुम क्यों इतना पीछे हटना चाहते हो?

रु०—मै पीछे नहीं हटना चाहता केदार, लेकिन एक्सपेरिमेंट करना एटीकेट के ख़िलाफ़ है। मैं तुम्हारे साथ इतनी बेतकल्लुफ़ी से बातचीत करता हूँ, लेकिन तुम्हारी वाइफ़ से कभी मिला ही नहीं।

मेरी तबियत तो स्टडी करने की होती है लेकिन···नहीं, नहीं·· वेल केदार, अगेन कॉंग्रेचुलेशन्स।

के०—[व्यग्रता से] मुझसे कोई तकल्लुफ नहीं तो उनसे भी नहीं। फिर वे तो आपको जानतीं हैं। और कौन आपको नहीं जानता ? फिर हमारे केस से अगर दुनिया होशियार बनती है तो इससे बढ कर ख़ुशी की कौन बात हो सकती है ? मैं भी प्रोफेसर हूँ, रिसर्च के लिए कोई रोक नहीं।

रु०—हाँ, मैं देखना चाहता था केदार, उनकी साइकॉलाजी क्या है !

के०—तो तुम अपना एक्सपेरिमेंट कर सकते हो डॉक्टर ! मैं मैं उन्हें यहाँ किस समय लाऊँ ?

रु०—आजकल मैं एक दूसरे एक्सपेरिमेंट में लगा हूँ।

के०—हाँ, मैंने सुना था कि तुम इनस्ट्रूमेंट की सहायता से रोने की आवाज़ को हँसी में बदल सकते हो !

रु०—[खड़े होकर घूमते हुए] इसमें विचित्रता क्या है ? मैंने हर एक स्वर के वाइब्रेशन (कम्पन) की स्टडी की है। जैसे 'ई' है। यह क्लोज़ लॉंग फ्रॉंट वावल—संवृत् दीर्घ अग्र स्वर है। इसके बोलने मे जीभ के आगे का हिस्सा उठ जाता है। लेकिन 'ऊ' जो है वह क्लोज़ लॉंग बैक वावल है—संवृत् दीर्घ पश्च स्वर। इसके बोलने में जीभ का पिछला भाग उठता है। मैंने रोने के इस 'ई' को हँसने के 'ऊ' में बदलने में सफलता पायी है।

के०—[हँसता हुआ] यह तो बड़े मज़े की बात है। फिर दुनिया

में कभी रोना सुन भी न पड़ेगा। दुनिया से रोना ही उठ जायगा।

रु०—लेकिन इससे क्या ? रोने की भावना का उठ जाना ज़रूरी है। शायद हँसी सुनते-सुनते रोना भूल जाय !

के०—तब तो संसार का तुम बड़ा उपकार करोगे, डॉक्टर !

रु०—उपकार तो तब होगा जब मेरा नया एक्सपेरिमेंट पूरा हो जायगा।

के०—कौन सा ?

रु०—मै एक ऐसा रस बनाने में लगा हुआ हूँ जिसके पीने से बूढ़ा आदमी भी जवान हो सकता है।

के०—[उछल कर] ऐं, सचमुच ?

रु०—हाँ, बूढा भी जवान हो सकता है।

के०—तब तो क्या कहना ! मुझे दोगे डॉक्टर ?

रु०—ज़रूर। लेकिन . [सोचने लगता है।]

के०—लेकिन क्या ? क्या सोचने लगे ?

रु०—कुछ नहीं। मेरे मन मे यही बात उठी कि तुम्हारी इस ख़ुशी में क्या तुम्हारे बूढे होने की भावना नही पायी जाती ?

के०—(हँसकर) भला तुमसे मै क्या छिपा सकता हूँ डॉक्टर, लेकिन इस बात को छोड़ो। यह बतलाओ कि तुम उस रस का मुझ पर एक्सपेरिमेंट करोगे ?

रु०—हाँ, हाँ, इसमे तो मुझे ही आसानी होगी। मुझे कहीं दूर न जाना होगा।

के०—लेकिन यह बात असम्भव है, डॉक्टर ! एक रस से बूढ़ा आदमी ? जवान मे तबदील हो जाय !

रु०—असम्भव क्यो है ? पुराने ज़माने मे योगी लोग कितने दिनों तक जीते थे ? जानते हो वे क्या करते होंगे ? स्पाइनल कालम—मेरु-दण्ड के नीचे मूलाधारचक्र के सूर्य से जो विष का प्रवाह पिंगला नाड़ी से शरीर मे होता है, वे उसे रोक देते थे और सहस्र-दल-कमल के ब्रह्म-रन्ध्र के पास चन्द्र से इडा नाड़ी मे जो अमृत का प्रवाह होता है उसे और भी उत्तेजित करते थे। आदमी में काया-कल्प होता था। वह हज़ारों वर्ष तक जीता था। वे यह सब किसी यौगिक क्रिया से करते थे, मैं यह एक तरल पदार्थ से करना चाहता हूँ। मूलाधारचक्र के विष को अपने रस से नष्ट करना चाहता हूँ।

के०—तब तो डाक्टर बड़ी अच्छी बात होगी !

रु०—[प्रसन्नता से] इसमें कोई शक नहीं, बड़ी अच्छी बात होगी। आदमी हज़ारों वर्ष तक जवान रह कर ज़िन्दा रह सकेगा। आजकल की ज़िन्दगी कितनी छोटी है ! ५०, ६०, ७० बस। इतने मे क्या होता है ? जिन्दगी में इतनी बहुत सी बाते हैं जिनके लिए ५०, ६० वर्ष कुछ भी नहीं हैं। आदमी की उमर तो और बड़ी होनी चाहिए। हमारे देश मे तो औसत उमर सिर्फ २३ साल की है। हम और आप किसी दूसरे की ज़िन्दगी में साँस ले रहे हैं।

के०—सचमुच डॉक्टर, यह काम कर दो तो पहले हम तुम ही अमर हो जायँ।

रु०—और रत्ना ? मिसेज़ रत्ना !

के०—हाँ, वह भी। [सिर हिलाता है]

रु०—उसे क्यों भूल गये ?

के०—[कटते हुए] आँ, आँ, वह भी। उसे कैसे भूल सकता हूँ ? डाक्टर, इन बातों को···तुम्हारी इन खोजों को सुन कर तो मेरी तबीयत और भी हो आयी है कि तुम मेरी वाइफ की साइकॉलोजी की परीक्षा करो।

रु०—लेकिन मेरा साहस नहीं होता। एक अपरिचित और फिर स्त्री।

के०—मैं जो कहता हूँ। वह मेरी स्त्री है। तुम्हें जानती है। फिर तुम भी उसे जानने लगोगे।

रु०—फिर भी·····

के०—अच्छा, एक बात सुनो। भीतर के कमरे में चलो। मैं तुम्हें बतलाऊँ। (उठ खड़े होते हैं।)

रु०—भीतर चलूँ ?

के०—हाँ, भीतर एक बात कह दूँ। उससे तुम सब समझ सकोगे।

रु०—अच्छा, चलो। ए, ज़रा ठहरो। [ज़ोर से] किशोर [किशोर का प्रवेश] देखो, वे दो-तीन चिट्ठियाँ टाइप करो। मैं अभी आता हूँ, समझे ?

[डॉक्टर रुद्र का प्रोफेसर केदार के साथ दरवाज़ा (श) से प्रस्थान किशोर टाइप करता है। बैकग्राऊंड म्यूज़िक होता है। दो-तीन मिनट के बाद डॉ० रुद्र का प्रो० केदार के साथ हँसते हुए प्रवेश।]

रु०—अच्छी बात है। तो फिर आप कितनी देर बाद लौटेंगे ?

के०—यही पाँच मिनट में।

रु०—तो फिर भाई, मैं ज़िम्मेदार नहीं। तुम जानो।

के०—सब बातें मुझ पर छोड़ दो डाक्टर, कम से कम मुझे इत-मीनान तो हो जायगा।

रु०—अच्छी बात है।

के०—तो फिर मैं जाता हूँ। [चलने के पूर्व सिगरेट जलाते हैं।]

[अभिवादन-स्वरूप हाथ उठाकर केदार का प्रस्थान। डॉ० रुद्र कुर्सी (अ) पर बैठ कर सोचने लगते हैं। थोड़ी देर बाद किशोर से—] किशोर!

कि०—[पास आकर] कहिए।

रु०—देखो, मैं जो एक्सपेरीमेंट कर रहा हूँ उसकी सारी चीज़ें लाकर सामने रखो।

कि०—वही 'ईंटरनल यूथ' की चीज़ें?

रु०—हाँ। [आदेश-दृष्टि]

कि०—बहुत अच्छा।

[किशोर आलमारी खोलता है। एक अलग टेबुल (इ) पर वह एक टावेल, दो बोतलें एक काली और छोटे मुँह की, दूसरी सफ़ेद और चौड़े मुँह की, एक बेसिन, एक प्लास्क, एक हरे रङ्ग का कपड़ा बड़ी सावधानी के साथ रखता है।]

कि०—स्टोव जलाऊँ?

रु०—हाँ। [बोतल उठा कर तरल पदार्थ देखते हैं।]

[किशोर स्टोव में स्प्रिट डाल कर दियासलाई से जलाता है। इस बीच में कमरे में जो चार्ट लगे हुए हैं, डॉ० रुद्र उनका निरीक्षण कर रहे हैं। देखते हुए वे कोट उतारते हैं। फिर चौड़े मुँह की बन्द बोतल जिसमें एक बल्ब लगा हुआ है, तिरछी करके देखते हैं। स्विच आन करने से बोतल के अन्दर का बल्ब जल उठता है। बल्ब के प्रकाश में वे तरल पदार्थ को बड़ी सावधानी से देखते हैं। देखते हुए किशोर से—] स्टोव जल गया है?

कि०—जी, पम्प करता हूँ। [स्टोव पम्प करता है।]

रु०—थोड़ा पानी गरम करो।

कि०—जी, [पानी एक बोतल से निकालता है, उसे गरम करता है।]

रु०—कल जो रिज़ल्ट्स निकले हैं, वे सिलसिलेवार हैं?

कि०—जी हाँ।

रु०—उन्हें मेरे पास रखो।

[किशोर टेबुल (अ) से दो-तीन काग़ज़ निकाल कर बोतलों के पास टेबुल (इ) पर रखता है।]

रु०—यह नोट पढ़ कर सुनाओ। [एक काग़ज़ किशोर के हाथ में देता है।]

कि०—(लेते हुए) जी। [नोट पढ़ कर सुनाता है।] मूलाधार चक्र से आगे बढ़ते हुए इडा नाड़ी पाँच बार मुड़ती है। तब वह आज्ञाचक्र के समीप पहुँचती है। रस का घनत्व इतना होना चाहिए कि वह नाड़ियों के तरल पदार्थ को प्रभावित कर मूलाधार चक्र में कम

से कम चौबीस सेकेण्ड में अपनी सम्पूर्ण प्रक्रिया कर सके। उस रस के तत्व में गन्धक·····[बाहर आवाज़ होती है। रोशन का प्रवेश दरवाज़ा (स) से। वह अदब से एक कोने में खड़ा हो जाता है। डॉ० रुद्र रोशन की ओर जिज्ञासा-दृष्टि से देखते हैं।]

रो०—हुज़ूर, प्रोफ़ेसर केदारनाथ साहब और एक बीबी जी आयी हैं।

रु०—अच्छा, बाहर के कमरे में। [किशोर से] पानी गरम हो गया?

कि०—जी, ल्यूकवार्म।

रु०—ठीक, स्टोव बन्द कर दो। तुम बाहर जाओ। देखो 'साइंटिफिक अमेरिकन' अपने साथ लोगे और उसमें छपे हुए मेरे आर्टिकल की 'समरी' बनाओगे।

कि०—वही 'दि डेफीनीशन अव् ए क्राई'?

रु०—हाँ, वही। बाहर के कमरे में बैठोगे और प्रोफ़ेसर तथा उनकी वाइफ़ को यहाँ भेजोगे।

[किशोर स्टोव बन्द करता है, टेबुल पर से साइंटिफ़िक अमेरिकन की प्रति उठाता है। दरवाज़ा। (स) से प्रस्थान। डॉ० रुद्र काली बोतल उठाकर आलमारी में रखते हैं और एक दूसरी नीली बोतल निकालते हैं। फिर संजीदगी के साथ अभ्यागतों का स्वागत करने के लिए उठते हैं। कोट पहनते हैं और दरवाज़ा (स) के क़रीब तक बढ़ते हैं।] आइए, [प्रोफ़ेसर केदारनाथ और उनकी पत्नी रत्ना का प्रवेश। रत्ना का

गौर वर्ण। सुन्दर मुख-मुद्रा। नीली रेशमी साड़ी। जैसे एक शान्त बिजली बादल के वस्त्र पहन कर आयी है। सौम्य और गम्भीर।]

के०—[हर्षोल्लास के साथ] डॉ० रुद्र, ये मेरी वाइफ मिसेज़ रत्नानाथ और [रत्ना से] ये.....

र०—[हाथ जोड़ कर] प्रणाम !

रु०—[हाथ जोड़ कर] नमस्कार !

र०—[प्रसन्नता से] आपके दर्शन कर कृतार्थ हुई।

रु०—[किंचित स्मिति के साथ] आपसे मिलकर खुशी हुई। आइए, बैठिए। [डॉ० रुद्र मिसेज़ रत्ना को काउच पर बिठलाते हैं। केदार और रुद्र पास की कुर्सियों पर क्रमशः (इ) और (अ) पर बैठते हैं। रुद्र, केदार और रत्ना को पान देते हैं। केदार सिगरेट जलाते हैं।]

र०—क्षमा कीजिए, मैं पान नहीं खाती। इलायची ही लिए लेती हूँ।

रु०—[संकोच-स्वर में] ज़रा माफ कीजिये, मैंने अपनी स्टडी और ड्राइंग रूम को एक में मिला रखा है।

र०—[हँस कर] ओह, इसमें कौन-सी बात है ? कमरे में तो सजावट है ही। इतने सुंदर चित्र लगे हुए हैं। शायद ससार के वैज्ञानिकों के हैं ! [गहरी दृष्टि से देखते हुए] उधर आइंसटीन हैं, ये मारकोनी, ये जगदीशचन्द्र बोस, ये मेघनाद साहा.....(दीवालों पर दृष्टि फेंक कर) आपका चित्र नहीं दीख पड़ता ?

के०—हाँ, तुम्हारा फोटो कहाँ है, डाक्टर ? [प्रश्नपूर्ण दृष्टि]

रु०—[वीतरागी के भाव से] क्या आवश्यकता है ? विज्ञान के

स्वामियों के फ़ोटो लगा करते हैं, सेवकों के नही। [बात बदलते हुए] कहिए, मार्ग में कोई कष्ट तो नहीं हुआ ?

र०—जी नहीं, धन्यवाद।

के०—डॉ० रुद्र, आपसे मिलने की अभिलाषा में शायद इन्हें रास्ते की तकलीफ कोई तकलीफ़ नही मालूम हुई। और अभी जब मैंने इनसे आपसे मिलने के बारे मे कहा तो ये ऐसे ही तैयार हो गयीं। इन्हें आपके दर्शन की बड़ी अभिलाषा थी।

र०—जो आज सफल हुई।

रु०—धन्यवाद। मुझे बहुत ख़ुशी हुई आपसे मिल कर। मैं तो आपके प्रोफ़ेसर केदार का साथी हूँ। हम दोनों साथ पढते थे। इन्होंने अँग्रेज़ी ली थी, मैने फ़िज़िक्स। ये 'ला' करते रहे, मैंने प्राइवेटली फ़िलासफ़ी पढ़ी। इसके बाद हमलोग अलग हुए। मै डी० एस्-सी० कर दिल्ली आ गया, ये वहीं प्रोफेसर हो गये। अगर फिज़िक्स के बजाय मैं फ़िलासफी ही लेता तो शायद प्रोफेसर केदार के साथ होता।

के०—मुझे तो ख़ुशी होती।

र०—लेकिन ससार का अपकार होता। फ़िज़िक्स और फ़िलासफ़ी को मिलाकर आपने जितनी खोजें की, उतनी कौन करता ? ऐसा वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक ससार मे कठिनाई से मिलेगा।

रु०—आप तो बहुत अच्छी हिन्दी बोलती हैं।

र०—हिन्दी मातृ-भाषा है न ? अपने देश की राष्ट्र-भाषा।

रु०—हमारे देश को आप जैसी आदर्श देवियों की आवश्यकता है।

र०—मुझे लज्जित न कीजिए। आप अपनी महानता से ऐसा कह रहे हैं। इनकी (केदार की ओर संकेत कर) इच्छा थी कि रास्ते में दिल्ली रुक कर आपके पास ठहरें। मैं भी यही चाहती थी कि विश्व-विख्यात महापुरुष के सत्संग में कुछ समय सार्थक करूँ किन्तु साहस नहीं हुआ। मैं नहीं जानती थी कि आप इतने महान् हो कर इतने सरल हैं।

रु०—[गभीर स्मिति के साथ] धन्यवाद।

र०—फिर शीला मेरी सहपाठिनी हैं। उन्होंने लिखा था कि काश्मीर जाते समय मेरे यहाँ न ठहरोगी तो लड़ाई होगी।

रु०—हाँ, आजकल लड़ाई का ज़माना है! जिसे देखो वहीं लड़ता है। [हास्य] लेकिन आज शाम को खाना मेरे यहाँ ही होगा।

के०—नहीं डाक्टर, हम लोगों को देर हो जायगी। आज ही जाना है। थैंक्स।

र०—मिसेज़ रुद्र;तो होंगी भीतर ?

रु०—नहीं, वे नहीं हैं। दस वर्ष हुए वे मुझे ससार में काम का भार सौंप कर चली गयीं! उनकी अनटाइमली डैथ ने ही मुझे खोज के काम की ओर बढ़ाया ; मैं मनुष्य-जीवन को अधिक स्थिर करना चाहता हूँ। काश, वे जीवित होतीं!

[रत्ना के मुख से अनायास आह निकल जाती है।]

के०—[वातावरण बदलते हुए] रत्ना, डॉ० रुद्र की खोज अचरज में डाल देने वाली है। इन्होंने एक ऐसा रस बनाया है जिससे

आदमी बहुत दिनों तक ज़िन्दा रह सकता है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इनके रस से बूढा भी जवान हो सकता है।

र०—[आश्चर्य से] सचमुच ?

रु०—लेकिन अभी वह रस ठीक तरह से तैयार कहाँ है ?

के०—क्यों उसमे कमी क्या है ?

रु०—उसके अन्तिम रूप के प्रयोग नहीं हुए हैं।

के०—तो मुझ पर कर सकते हो।

रु०—ज़रूर, तैयार होने पर कर करूँगा।

के०—लेकिन अभी क्या हानि है ? रस तो क़रीब क़रीब बन ही चुका।

रु०—हाँ, बन तो चुका है। लेकिन एकबारगी मनुष्य पर प्रयोग करना ठीक नहीं है।

के०—क्यों ठीक नहीं ? मेरी उम्र ५० के लगभग है। काम अब भी बहुत करना है। कभी थकावट मालूम होती है। मुझ पर प्रयोग करोगे तो मेरा ही भला करोगे।

रु०—मुमकिन है अभी उसका पूरा असर न हो।

के०—तो उसमें क्या हानि है ? एक दम २५ वर्ष का न हुआ तो दस-पाँच बरस छोटा हो ही जाऊँगा।

रु०—[रहस्य-पूर्ण मुस्कान से] मिसेज़ रत्ना, आपकी क्या राय है ?

र०—[संकोच से] मैं क्या कहूँ ?

रु०—प्रोफेसर केदार, अभी रस तैयार नहीं हुआ। यह देखो, अभी टेबुल पर ही रखा हुआ है। [उठ कर बोतल उठा कर उसे हाथों से झुलाते हैं] जब बन जायगा तो सचमुच मेरा जीवन सफल हो जायगा।

र०—आप तो अमर हो जाएँगे!

रु०—कौन जाने? लेकिन अब अधिक जी कर क्या करूँगा! जो कुछ थोड़ा-बहुत करना था कर ही चुका। और अब अकेला हूँ। मेरी स्त्री मेरा रास्ता देख रही होगी।

र०—आप ऐसी बातें न कहें। हृदय भर आता है। अभी आप न जाने क्या क्या खोज करेंगे!

के०—तब तक डॉ० रुद्र मैं तो तुम्हारे प्रयोग से लाभ उठाऊँगा ही। और टेबुल पर यह रस देख कर तो मेरी और इच्छा हो गयी है। डाक्टर, एक डोज़ मुझे दे दो। रत्ना·····[प्रश्न-सूचक दृष्टि]

र०—[आकुलता से] अभी वह तैयार कहाँ हुआ है? इस हालत में वह कहीं हानि न पहुँचावे?

के०—डॉ० रुद्र का रस और हानि पहुँचावे? असंभव, अब मैं अपनी तबीयत नहीं रोक सकता। तुम्हें देना ही होगा।

रु०—इतना इसरार?

के०—हाँ, अब यह उमर मुझे तकलीफ देने लगी है। काम भी नहीं कर सकता, नींद भी नहीं आती।

रु०—अच्छा, तब दूँगा। लेकिन काश्मीर हो आओ। तब तक मेरे सब तो नहीं कुछ प्रयोग अवश्य हो चुकेंगे। फिर अभी ऐसी

ज़रूरत भी नहीं। काश्मीर जा रहे हो। वहाँ जाकर तो ख़ुद तुम में ताज़गी आ जायगी।

के०—यह तो ठीक है। लेकिन यहीं से काश्मीर का असर लेता चलूँ। तुम्हारे रस से जो कुछ कमी रह जायगी वह वहाँ पूरी हो जायगी।

रु०—मैं नहीं जानता।

के०—डॉक्टर, मैं जानता हूँ। मुझे रस दो।

रु०—मिसेज़ रत्ना, इसकी ज़िम्मेदारी आप पर है?

र०—मै क्या कहूँ! मै क्या कहूँ!!

के०—[उठकर] डॉक्टर, इसकी ज़िम्मेदारी ख़ुद मुझ पर है। दो वह रस। एक दोस्त की ज़रा-सी बात पूरी नहीं कर सकते?

रु०—मिसेज़ रत्ना?

र०—[केदार से] देखिए, आप अभी रस क्यों पी रहे हैं? अभी वह रस तैयार कहाँ है?

के०—वह रस ज़हर तो है नहीं कि मैं मर जाऊँगा। उससे कुछ न कुछ लाभ होगा ही। और रत्ना, ज़िन्दगी मुझे बहुत प्यारी मालूम होती है। मुझे इस दुनिया में और रहने दो।.....

र०—[बीच में] मैं अब कुछ न कहूँगी।

के०—डाक्टर, प्लीज़.....

रु०—अच्छी बात है। [उठकर] प्रोफ़ेसर अगर तुम युवक हो गये तो मिसेज़ रत्ना को भी प्रसन्नता होगी?

र०—मैं तो अब भी प्रसन्न हूँ।

के०—डाक्टर, वे ठीक कह रही हैं। लेकिन मेरी ख़ुशी में वे और भी ख़ुश होंगी।

रु०—अच्छा, तो फिर रस तुम्हें दे दूँगा। इस कुर्सी पर बैठो।

[टेबुल के पास की कुर्सी (ई) की ओर संकेत करते हैं।]

के०—[अत्यानन्द से] ओः, थैंक यू डाक्टर ! ओ थैंक्स, थैंक्स ! हाऊ गुड यू आर ! डाक्टर, एक्सलैंट [कुर्सी (ई) पर बैठते है] यू आर माइ ट्रू फ्रेंण्ड।

रु०—व्हेन वाज़ आई नाट ? [रत्ना से] मिसेज़ रत्ना, प्रोफेसर अब युवक हो जायेंगे। बिलकुल नवीन···!

र०—डाक्टर रुद्र, देखिए इन्हें नुक़सान न होने पावे। मैं जानती हूँ कि आपके हाथ में ये सुरक्षित हैं, फिर भी मुझे घबराहट मालूम होती है। देखिए डाक्टर, आपका प्रयोग ठीक हो !

रु०—कोशिश तो मेरी आपके हित में होगी, लेकिन रस के इस स्टेज के विषय में मैं ठीक नहीं कह सकता।

के०—मैं ठीक कह सकता हूँ। अपनी सूरत तुम ख़ुद नहीं देख सकते, मैं देख सकता हूँ। रत्ना, तुम इतनी 'नरवस' क्यों होती हो ?

र०—मैं अजीब उलझन में हूँ।

के०—वह उलझन अभी दूर होती है। क्यों डाक्टर, जवान होने पर मुझे आप पहचान सकेंगे ?

रु०—[रत्ना से] आप प्रोफेसर केदार को पहचान सकेंगी ? [रत्ना चुप रहती है।]

के०—डाक्टर, इनकी पहचान काफी तेज़ है। मैं होली में इनके कुत्ते को ख़ूब रँग देता हूँ, तब भी ये उसे पहचान लेती हैं। तो क्या मुझे न पहचान सकेंगी ? (हास्य)

र०—[लज्जित हो कर] क्या कहते हैं आप !

के०—अच्छा रत्ना, मालवीय जी का कायाकल्प तो ठीक नहीं हुआ। डा० रुद्र की सहायता से मेरा कायाकल्प होगा। देख लो, मेरे इस दुबले-पतले शरीर को, इन सफेद बालों को, फिर ये देखने को न मिलेंगे। आख़िरी दर्शन हैं।

र०—आप बहुत हँसी करते हैं। [रुद्र से] डॉ० रुद्र, आपके सामने तो ये बहुत बिनोदी हो गये हैं।

के०—कमिङ्ग ईवेंट्स कास्ट देअर शेडोज़ विफोर। अब युवक होने जा रहा हूँ, विनोद न सूझे ?

र०—माफ करें मिसेज़ रत्ना, हम लोग आपस में बहुत बेतकल्लुफ हैं। अच्छा प्रोफेसर !

के०—हाँ, मैं बिल्कुल तैयार हूँ।

र०—(टावल देते हुए) यह टावल भिगो कर अपने बाल गीले कीजिए। स्टोव पर गरम पानी है।

[केदार उठते हैं, टावल भिगो कर अपने सिर से रगड़ते हैं। इस बीच में डा० रुद्र रिज़ल्ट्स के काग़ज़ात जो क्लर्क ने टेबुल पर रख दिये हैं, देखते हैं। रत्ना आवाक् हो कभी डा० रुद्र की ओर और कभी प्रोफेसर केदार की ओर देखती है।]

रु०—[अपने आप] ट्वेंटी थ्री प्वाइण्ट सेवन एट सेकण्डस्, प्वाइंट ज़ीरो-ज़ीरो वन्।

के०—मेरे बाल गरम पानी से भीग गये।

रु०—[कागज़ से अपना ध्यान हटा कर] अच्छा कुर्सी पर बैठिए। [केदार कुर्सी (ई) पर बैठते हैं। रुद्र टेबुल पर से हरा कपड़ा उठा कर केदार के सिर से बाँधते हुए कहते हैं।]

सहस्रदल कमल तालू के मूल से सिर के ऊपरी भाग तक है। मैं इस कपड़े से उसे कसता हूँ। सहस्रदल कमल का हरे रंग से सामञ्जस्य है। जब आप रस पी लें तो इस कपड़े को खोल लें।

के०-डॉक्टर, आप ठीक कहते हैं। रत्ना, यह चमत्कार देखो!

रु०-और देखो, जो रस मैं आपको दूँगा, उसे एक घूँट ही मे पी जाना होगा। उसे एकबारगी मूलाधारचक्र में पहुँचना चाहिए। धीरे धीरे पीने से नुक़सान होने का अन्देशा है।

र०—[भर्राई आवाज़ में] जल्द ही पी जाइएगा!

के०--बहुत जल्दी।

रु०--और साथ ही यह सोचना पड़ेगा-कहना पड़ेगा—कि मैं जवान हो रहा हूँ--मै जवान हो रहा हूँ।

के०—ठीक है डॉक्टर, मैं ऐसा ही सोचूँगा, ऐसा ही कहूँगा।

रु०—और देखिए, मै दवा निकालने जाऊँगा, वैसे ही अंधेरा हो जाना चाहिए। नहीं तो उजेला आँखों की राह होकर दवा के गुण को नष्ट कर देगा। इस नीली बोतल में उजेले का प्रवेश नहीं है।

के०—ठीक, मालवीयजी ने भी कायाकल्प के प्रयोग अँधेरी कोठरी में किये थे।

रु०—(रत्ना से) अच्छा मिसेज़ रत्ना, आप उस दूर की कुर्सी पर बैठ जावें। प्रोफ़ेसर केदार, इस समय आप मिसेज़ रत्ना की बात नहीं सोचेंगे। सारी दुनियाँ को भूल कर ख़ुद को देखेंगे।

के०—ऐसा ही होगा!

[रत्ना दूर की कुर्सी (उ)पर जाकर बैठती है।]

रु०—तो अब मैं रस निकालता हूँ।

[डॉ० रुद्र बोतल हाथ में लेते हैं। स्टेज का सारा प्रकाश बुझा दिया जाता है। केवल बोतल और गिलास के उठाने और रखने की आवाज आती है। गिलास में तरल पदार्थ का 'छल'-'छल' शब्द होता है।]

रु०—प्रोफेसर, यह मैंने ग्लास मे रस डाल दिया।

के०—लाइए। (केदार रस पी जाते हैं।) डॉक्टर, मैंने यह रस पी लिया, मैंने सिर का कपड़ा भी खोल लिया।

रु०—अब जवान होने की भावना सोचिए।

के०—[धीरे-धीरे प्रत्येक शब्द पर रुकते हुए] मैं...जवान...हो... रहा...हूँ। मैं...जवान...हो...रहा...हूँ...

[आधे मिनट तक शान्ति रहती है।]

रु०—इस समय तक रस का असर हो गया होगा। कुछ अनुभव कर रहे हैं!

के०—हाँ, मुझ में बहुत अन्तर हो रहा है। मालूम होता है जैसे मेरे सिर में चीटियाँ चल रही हैं। हाथ पैर में कोई लहर दौड़ रही है। आँखों में कुछ बिजली सी चमक रही है।

र०—[उद्विग्नता से] क्या.....?

रु०—[जीभ की सीटी से रत्ना को बीच ही में बोलने से मना करता है।] प्रोफ़ेसर केदार, अब आप जवान बन रहे हैं, यह तो होगा ही। लेकिन लहर ऊपर से नीचे जा रही है या नीचे से ऊपर ?

के०—नीचे से ऊपर।

रु०—(आश्चर्य से) एँ ?

[डाक्टर रुद्र शीघ्र ही प्रकाश करते हैं। उजेले में दीख पड़ता है, केदार बिलकुल बूढ़े हो गये हैं। उनके सभी बाल सफ़ेद हो गये हैं। आँखें कमज़ोर होकर बार-बार झपक जाती हैं। हाथ पैर शिथिल हो गये हैं।)

रु०-(उद्वेग से) यह क्या !

के०—[अपनी ओर देख कर] अरे, यह क्या ?

र०—[विह्वल होकर] अरे यह क्या ? [कुर्सी पर अचेत हो जाती है।]

रु०—[कुछ क्षण आवाक् रह कर धीरे-धीरे] प्रोफ़ेसर, यह क्या हुआ ? मिसेज़ रत्ना बेहोश हो गयीं !

के०—[करुण स्वर में] रत्ना ! [उठना चाहता है।]

र०—प्रोफ़ेसर, वहीं बैठिए। मै सहायता करता हूँ। [रत्ना के मुख

पर पानी छिड़कते हैं।] ओफ, मिसेज़ रत्ना इतने कमज़ोर दिल की है ! [हवा करते हैं।]

के०—डाक्टर, इन्होंने मेरी यह हालत जो देख ली।

रु०—[रत्ना को पुकारते हैं।] मिसेज़ रत्ना ! मिसेज़ रत्ना !!

[हवा करते हैं। रत्ना होश में आती है।]

र०—[होश में आकर परिस्थिति की स्मृति आने पर] ओह, यह क्या हो गया ! [कुर्सी पर अत्यन्त शिथिल। फिर शीघ्रता से केदार के पास आकर ज़मीन पर बैठ जाती है।]

रु०—[ढाढ़स देते हुए] मिसेज़ रत्ना, आप अपना हृदय मज़बूत करें।

र०—ओह, ये कैसे हो गये !

रु०—मैं कहता था कि अभी रस तैयार नहीं है। सहस्रदल से अमृत उठने के बजाय मूलाधार का विष सारे शरीर मे फैल गया ! उसी से बुढापा आ गया !

र०—आह ! [अत्यन्त दुख की मुद्रा।]

रु०—मिसेज़ रत्ना, मुझे माफ़ करें। मेरे ही रस से यह सब कुछ हुआ ! लेकिन इसमें मेरा क़ुसूर बहुत थोड़ा है। प्रोफ़ेसर केदार ने ही इतना ज़ोर दिया। [केदार के समीप कुर्सी (६) रखते हुए] उठिए कुर्सी पर बैठ जाइए।

र०—ओह, यह क्या हो गया ! [कुर्सी पर बैठना अस्वीकार करती है।]

र०—[उमंग से उठकर] कैसे ? डॉक्टर कैसे ? जल्द बतलाइए ?

रु०—मैं देख रहा हूँ, प्रोफ़ेसर केदार से अधिक आपकी हालत ख़राब है। आप इतनी दुखी हैं तो केदार आपको देख कर और भी दुखित होंगे। मैं एक काम कर सकता हूँ।

र०—वह क्या ? [उत्सुकता की दृष्टि।]

रु०—मनोविज्ञान के अनुसार यह परिस्थिति केवल एक बात से हट सकती है। वह यह कि आप भी बूढ़ी बन जायँ। [रत्ना गंभीर हो जाती है।] उस वक़्त न प्रोफ़ेसर केदार को तकलीफ होगी न आपको! फिर रस तैयार होने पर मैं आप दोनों को अच्छा कर लूँगा।

र०— [गंभीरता से धीरे-धीरे] मैं भी बूढ़ी बन जाऊँ ? [कुर्सी (इ) पर बैठ जाती है।]

रु०—हाँ, आपको कोई कष्ट न होगा।

र०—डॉक्टर, क्या मेरे बूढ़े होने से प्रोफ़ेसर साहब को शान्ति मिलेगी ?

रु०—ज़रूर। वे चाहे कुछ न कहें किन्तु उन्हें तभी शान्ति मिलेगी। क्यो प्रोफ़ेसर केदार ?

[केदार कुछ नहीं बोलते।]

र०—[सोचते हुए] मुझे भी बूढ़ी होना चाहिए !

रु०—हाँ। [स्वर में दृढ़ता]

र०—तो···तो···फिर मुझे भी वही रस दीजिए। डॉक्टर, मैं इस ज़िन्दगी से घृणा करती हूँ। डॉक्टर, यह उमर मुझे नहीं चाहिए। डॉक्टर, इस अभिशाप से मुझे बचाइए। डॉक्टर·····

रु०—ठहरिए, ठहरिए मिसेज़ रत्ना ! ज़रा सोचिए।

र०—अब सोचने का अवकाश नहीं है। मैं भी इसी रास्ते से जाना चाहती हूँ।

रु०—ठीक है, आपको जाना चाहिए लेकिन इस पर विचार कर लीजिए। आप अपना बलिदान करने जा रही हैं।

र०—मैं इसके लिए तैयार हूँ। मुझे ज़िन्दगी की शान्ति किसी तरह नहीं मिलेगी।

रु०—मिसेज़ रत्ना, आप बहुत कुछ खो रही हैं।

र०—[तीक्ष्णता से] डॉ० रुद्र, मेरे पति की यह दशा देखकर आप मुझ से परिहास नहीं कर सकते।

रु०—[गांभीर्य से] मिसेज़ रत्ना ! मैं आप से परिहास नहीं करता—नहीं कर सकता। डॉ० रुद्र ने जीवन भर किसी से परिहास नहीं किया।

र०—मुझे क्षमा करें डॉक्टर, मैं इस समय अपने में नहीं हूँ।

रु०—मैं आपसे सिर्फ़ अपने सबन्ध में सोचने के लिए कह रहा था जिससे आप मुझे दोष न दें।

रु०—मैं आपको दोष नहीं दूँगी। आप शीघ्र ही अपना प्रयोग करें। (अनुनय)

के०—(एक साथ ही) ठहरो, मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।

र०—नहीं, ऐसा होगा। मैं इस समय आपका निषेध न मानूँगी।

के०—[धीरे धीरे] मैं नहीं चाहता रत्ना, कि तुम ··तुम अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करो। मैं तो मौत के क़रीब-क़रीब पहुँच गया। मेरे पीछे तुम क्यों अपनी दुनिया ख़राब करती हो ?

र०—मेरी दुनिया अब रही कहाँ ? आपकी इस दशा में मुझे यही करना चाहिए।

के०—रत्ना, यह रस तुम मत पियो।

र०—मुझे पीने दीजिए।

के०—यदि मैं यह रस तुम्हें न पीने दूँ ?

र०—ऐसी दशा में कदाचित् मुझे आत्म-हत्या करना पड़े।

के०—ओह रत्ना ! रत्ना ! डॉ रुद्र ! [उद्विग्न होते है।)

रु०—प्रोफेसर, अगर मिसेज़ रत्ना की इच्छा होगी तो वह रस वे पी सकती हैं।

र०—हाँ डॉक्टर, मैं पीना चाहती हूँ।

रु०—ठीक है। मैं अपना रस दूँगा। आपको अपने सिर पर हरा कपड़ा न बाँधना होगा। आप लोगों के मस्तिष्क की बनावट कपड़े की आवश्यकता नहीं रखती। केवल एक घूँट में रस पी जाना होगा।

र०—मैं एक ही घूँट में पी लूँगी।

रु०—केवल अँधेरा करना होगा। आपके कुछ सोचने और कहने की आवश्यकता नहीं है। बुढ़ापे के लिए कुछ सोचने की आवश्यकता नहीं होती। वह आप से आप आ जाता है। सिर्फ आँखें बन्द कर लीजिएगा।

र०—दीजिए वह रस मुझे !

रु०—अच्छी बात है।

(प्रकाश बुझ जाता है। बोतल के उठाने और रखने की पुनः आवाज़ आती है।)

र०—मैंने रस पी लिया, डॉक्टर!

के०—रत्ना, तुमने यह क्या किया!

र०—आप शान्त रहिए, मुझे कोई कष्ट नहीं है।

रु०—आप कुछ अनुभव कर रही हैं, मिसेज़ रत्ना?

र०—कुछ नहीं।

रु०—स्त्री के परिवर्तन में कोई कठिनाई नहीं होती। अब आप भी बूढ़ी हो गयीं। आपके सभी बाल सफेद हो गये होंगे। अब मैं उजेला करता हूँ।

[डा० रुद्र स्विच 'आन' करते हैं। प्रकाश में दीख पड़ता कि रत्ना पूर्ववत् ही बैठी है। उसके बाल सफेद नहीं हुए। वह पहले ही की तरह रूप-रङ्ग वाली है। प्रो० केदार फिर वैसे ही हो गये। उनके बालों की सफ़ेदी दूर हो गयी। वे पूर्ववत् बैठे मुस्कुरा रहे हैं।]

र०—[अपनी ओर देख कर] अरे, मुझमें तो कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। यह कैसा रस? [प्रो० केदार की ओर देखती है। प्रसन्नता और उल्लास से] अरे, आप तो फिर वैसे ही हो गये, फिर वैसे ही हो गये! [केदार के समीप जाती है] ओ डॉक्टर, डॉक्टर, ये फिर वैसे ही हो गये!

के०—(मुस्कुरा कर) हाँ, मैं तो फिर वैसा ही हो गया!

र०—(हर्षातिरेक से) रस तो मैंने पिया और ये अच्छे हो गये। आपका रस तो जादू है, डॉक्टर !

रु०—[मुस्कुरा कर] मिसेज़ रत्ना, प्रो० केदार का बुढापा और आपकी जवानी न्यूट्रलाइज़ हो गयी, मालूम होता है ।और आप दोनों फिर वैसे ही हो गये !

र०—ओह डॉक्टर, आप क्या हैं, कुछ समझ में नहीं आता ! [रत्ना हँसते-हँसते काउच पर बैठ जाती है। प्रोफेसर केदार मुस्कुराते हैं।]

रु०—(अत्यन्त शिष्टता के साथ) मिसेज़ रत्ना, मैं सब से पहले आपसे क्षमा माँगता हूँ।

र०—कैसी क्षमा ? (केदार से) देखिए, ये क्षमा क्यों माँगते हैं ?

के०—जो जितना बड़ा होता है, वह उतना ही नम्र होता है।

रू०—देवीजी, आप कितनी महान् हैं। आपकी प्रशंसा मुझसे किसी प्रकार हो ही नहीं सकती। आपके दर्शन कर मैं धन्य हुआ।

के०—मैं धन्य हुआ डॉक्टर ! ओफ, रत्ना भारत की रत्ना हैं।

र०—यह आप दोनों क्या कह रहे हैं ?

रु०—देवीजी, यह मेरा केवल एक एक्स्पैरीमेंट था। न कोई बूढ़ा हुआ न जवान। थोड़ा-सा मनोविनोद होता किन्तु उससे आपको कष्ट हुआ। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।

र०—[गंभीर हो कर] मैं कुछ समझी नहीं डॉक्टर !

रु०—मैं केवल नारी का मनोंविज्ञान जानना चाहता था और इसके लिए मैंने आपके पति-देव प्रोफ़ेसर केदारनाथ जी से

आज्ञा ले ली थी। उन्होंने स्वय इस प्रयोग मे दिलचस्पी ली। इन्होंने स्वयं एकान्त में इस प्रयोग की रूप-रेखा खींची थी। मैने ईटरनल यूथ का रस तो आल्मारी में बन्द कर दिया था। केवल शर्बत आप लोगों ने पिया।

र०—(गंभीर होकर) अच्छा, तो आप लोगों ने मेरी परीक्षा ली।

रु०—जिससे आपका गौरव बढ़ा।

के०—मुझे सुख और सतोष मिला।

र०— डॉ० रुद्र, प्रशंसा के लिए धन्यवाद, किन्तु इससे मुझे प्रसन्नता नहीं हुई।

रु०—इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

के०—[हाथ जोड़ते हुए] मैं भी···[उठ खड़े होते हैं।]

र०—[बीच ही में] अरे, यह क्या करते हैं ? आप दोनों मुझे लज्जित करना चाहते हैं !

रु०—नहीं, आप वास्तव में देवी हैं। मैं तो पहले ही जानता था कि आप सर्वगुण सम्पन्न हैं। आज संसार भी जान गया कि आपका आदर्श कितना महान् है।

र०—अच्छा, यह बतलाइए डॉक्टर, यदि आपका केवल यह प्रयोग था तो ये बूढ़े कैसे हो गये ?

के०—मैं बूढा कैसे हो गया यह पूछना चाहती हो ? पहली बार जब अँधेरा हुआ तो मैने अपने सिर में चाक रगड़ ली। मैंने अपना सिर गीला कर ही रखा था। बाल सफेद हो गये। तुम्हें कुछ दूर कुर्सी पर

इसीलिए तो बिठला रक्खा था कि तुम आसानी से मेरे भेद को न जान सको।

र०—(कौतूहल से) ऐसी बात थी? आप बड़े वैसे हैं! फिर·····आप फिर से कैसे पूर्ववत् हो गये? बालों की सफेदी क्या हुई?

के०—जब दूसरी बार अँधेरा हुआ तो मैंने गीली टावल से अपना सिर फिर ज़ोर से रगड़ लिया। सारी चाक टावल में लग गयी। मेरे बाल फिर पहले जैसे हो गये!

र०—(अन्यमनस्कता से) आप दोनों ने एक जाल रचा था। मैं तो लुटते-लुटते बच गयी!

के०—इसके लिए मैं माफी चाहता हूँ। जुरमाने में मैं वही गीली टावल दे सकता हूँ जिसमें चाक लगी हुई है। [गीली टावल कोट के भीतर से निकाल कर उपस्थित करता है।]

र०—नहीं, इसका जुरमाना मैं दूँगा।

के०—(प्रसन्नता से) जो जुरमाना दे, रत्ना, मैं तो कृतार्थ हो गया, मेरी सारी शंकाएँ निर्मूल हो गयीं!

र०—(आश्चर्य से) कैसी शंकाएँ?

र०—कोई शंकाएँ नहीं। आप तो देवी हैं। आपको कष्ट पहुँचाने की ज़िम्मेदारी मुझ पर है। मैं जुरमाना दूँगा। आज शाम को मैं एक बच्चे के रोने की आवाज़ हँसी में बदल कर आपका मनोरञ्जन करूँगा!

र०—सचमुच ! अनेक धन्यवाद ! लेकिन हम लोग तो आज जा रहे हैं !

रु०—लेकिन मेरे अनुरोध से आपको रुकना होगा । क्यों प्रोफेसर केदार ?

के०—रत्ना, जब डॉ० रुद्र इतना आग्रह कर रहे हैं तो आज रुक जाने में क्या हानि है ? एक दिन की देर और सही ।

र०—अच्छी बात है, लेकिन एक शर्त पर । आप हम लोगों की जवानी और बुढापे की बात किसी से न कहे [हास्य ।]